

3370

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ

ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ

ASHA ARCHIVES

अथ वसिष्ठ उवाच ॥
सदा का त्ववति यथुव
एव वति दशविकसिस्तु
रक्षवति तुर्दिगुरुत
स्वामि वति नपि व

२२५ माहतीक सविदा

गच्छा ॥

॥

वैश्वस ॥

स ॥

ननीस ॥

[illegible]

पू॥६॥ मालका गात्रके वायविय धूनके ॥ ॥ स्मृतयः
स्मृत्यादवनः य गात्रनवायउ (थ) मूद्य पाणु सु थु दावगय ॥
मालका वाय ॥ गच्छा दात्र मूलमंकुन ॥ सट रंनवानन्द
विनाधियतयहं ट मीउगवधु दवीयापू ॥ ३ ॥ स्मृति
युय ॥ मालका गात्रलावके ॥ ॥ स्मृतिहाने ॥ ३ मूयादि ॥
उंयावचन्द्रा कमात्र गा मरु मग्निज वा वेद गावत्व सु
धिनकालः चलस्मा यस्मि ना रुव ॥ स्मि ना रुव मदा दवी
नवाना मनूजा धिय ॥ यावदक्ष मिययुक्त गाव ॥ तस्मि

वमाचन ॥ यजमानस्य स्वर्गसिद्धिजयकामनार्थनिवना
थपार्वध्यंवलस्त्वय्यस्मिन्नारव ३ ॥ ॥ नासिद्य ॥ उग्र
यादि ॥ यजमानस्य स्वर्गसिद्धिजयकामनार्थः पात्राय
हस्त्वयूनः सफसुगीया ० उग्रयधुं दद्याच्च धनिमित्य
थः केतुं श्रीसुभाय अद्यनिमः ॥ पृथ्वीराजन समर्थ ॥
वृद्धादीनमृष्याद्यगुननमस्कात्रादि ॥ ॥ गंगादेवाद्य
न ॥ जलुपागयूजाः अद्यपागयूजा ॥ अक्षयूजा ॥ माननि
वर्थ ॥ ३ नमा महाहोत्रवाय २ ॥ श्रीरुद्रवाय ॥ ॥

गंगाद्यंवल्लिधवस्ववसु ॥ साधुर्न ॥ ॥ श्रीसवका ॥
नृजं नवका सनायपायू ॥ नृजं श्रीपृथ्वीरुद्राद्यर्द्रनादव
गृहीतधनं कृणुयात्तायवायू ॥ वलि ॥ नृजं (थयवस्मिद्धा
पदेरुद्रादी देवी महाध्वं कृणुयात्तायवायू ॥ वलि ॥
नृजं स्वो सिद्धनदीयकुत्रादेवी महायात्रि कृणुयात्ता
यवायू ॥ वलि ॥ नृजं कीर्ति कुं वस्वनिद्र महास्त्वनादि
पतयव्या कपिलायजगता नैरास्त्यमिमय जाला मुख
अवग श्रीरुद्र २ नववृष नग २ उग्र २ स २ ल २

वासुवनिहकीवसंवेदेत्यविनागिनी। गणाः
याउगहस्यचखद्वाङ्गुविभिनाथनूडवन्तु
युवकुम्भवेष्टुगम्भुनायिका। चकुम्भवेष्टुका
येवचकुम्भवेष्टुगामिचविकानवमीयागवकुम्भ
मध्यस्मामिष्टुगदिगा। प्रावनारात्र। कश्चन
नागुक्ताचधूमिका। यीगाचपुल्लोक्तयाजान
वेस्म। हिरिस्म। गामहि। धाथयमान्गम्भी। गले

गलकनगुहमृष्टिक। स्मयाष्टनयंकुम्भाः
गवकुम्भदिगकुम्भा। पुर्वस्मालोमहादेवीमह
गवगीनमासुगी। धानपृथ्वीनम। अवाहनाः
दि। पाठमुद्रा। मूलनवेद। श्रयोउलिनम।
दी। श्री। कुम्भी। उं। दी। नो। उ। यद। कुम्भी। उ। यव। धुम्भी। मदेनी
दुम्भी। सुम्भी। दात्रम्भी। २। त्वी। मां। इम्भी। ४। मृ। यद। र्वनम४। स्वाहा
३। नम४। श्री। दी। यदु। योय। यनेम४। श्री। दी। यायू।
नम४। मृ। र्ववानन्दवीनाप्रियगय। महाविद्यावाउ

॥ ५ ॥ न्यास ॥ आ ध्यानादि ॥ २ ॥ ५ सिंहासन न्याय ॥ ५ महि
वासनयाय ॥ ध्यान ॥ ग्रयां जली ॥ निंज ननं च धु वरु पायू ॥
निंज नम ४ श्रीं ॥ ३ ॥ वलि ॥ कृण मदा ॥ ५ ॥ न्यास ॥
निंज आ ध्यानादि ॥ २ ॥ निंज सिंहासन न्याय ॥ निंज महि वा
सनयाय ॥ ध्यान ॥ ग्रयां जली ॥ निंज उं डी च धु नू या
ये यायू ॥ निंज नम ४ श्रीं ॥ ३ ॥ वलि ॥ काय ॥ १ ॥
न्यास ॥ निंज आ ध्यानादि ॥ २ ॥ निंज सिंहासन न्याय ॥ निंज
महि वासनयाय ॥ ध्यान ॥ निंज मूं मूं ४ म् मि च धु का

ये यायू ॥ निंज नम ४ श्रीं ॥ निंज च धु ॥ ३ ॥ वलि ॥ स्व म् म् ॥
॥ ४ ॥ ॥ कायायनी ॥ न्यास ॥ निंज श्रीं म् श्रीं द्वादयादि
१ ॥ निंज आ ध्यानादि ॥ २ ॥ निंज सिंहासन ॥ ५ महि
वासन ॥ ध्यान ॥ निंज कायायनी म्हा देवी ह म स्यामा
म्हू पि धी ॥ सवर्ण काल ॥ म्हा राय यी नान्न तप या धना ॥
दोला कालि ग म ध्वा का ॥ ध्वा कालि ग विग्रहा ॥ द्वाद ॥
तामु जा देवी म्हा देवी ध्वा नि धी ॥ स्व म् वा धी त ध्वा भ कि
धि म्हा लं च क द कि ॥ ध्वा रु लं ध त्वं क म्हा य म्हा क् भ म्हा

मक कनासिहासनसमावृतामहिष्माममुयसिधा। श्रु
लंकेकंयद्यागुचिकारुंश्रुधुनिद्यातिनी। ध्वयमाना
सदादेवीसर्वशक्तकुर्यकवी। जयाद्यादवगावृता
काख्यायदीनमाहमृते॥ ध्यानपर्व्यायायू। गुयांजलि
॥ नुंऊंऊं। सहामहाइ। ग्रवधि। को। लाय। र्ये। पायू॥ ३॥
वलि। यानिमूडा॥ ॥ यनिवान॥ नुंऊंऊंयाये२॥ ५। वि। या
ये२॥ ५। अ। डि। गाये२॥ ५। अ। यना। डि। गाये२॥ ५। ऊ। रु। न्ये
२॥ ५। सु। म्। न्ये२॥ ५। भा। ह। न्ये२॥ ५। आ। के। व। र्छे२॥ स्व

स्वमूडा॥ ॥ गणासुवध्वनी॥ न्यास॥ नुंऊं तां हृद
यायनम॥ ६॥ नुंऊं आध्यादि६॥ ५। सिंहासन२॥
५। महिषासन२॥ ध्यान॥ नुंऊं सुवध्वनी महादेवी
नमामिपूजागनी॥ गदिमीयषासंकासाक्षलताध्व
विचिन्त्य॥ सर्वालकालसंयुक्ताहाउमालावर्लवि
नी। अक्षयदशरुजाकाकायांनवगुरुसुसुवृहा। खदु
शक्तिगंधावाद्यमद्वर्गं मृदुनादिव। वद्वं वद्वं शत्राका
चयकुं शूलं चक्रि। ॥ रुं टं कं पां शं गंधुं वं तं कुं नी

[illegible][illegible]

शासः

[illegible]

गृह्ण २ कुत्र २ मत्र २ ल २ र २ ह २ म २ दा २ अ २ म २ वा २ पि
य २ न २ थ २ रु २ म २ सु २ व २ न २ द २ म २ म २ स्था २ हा ॥ व २ लि ॥ ॥
त २ मा २ वा २ मु २ दा ॥ न २ या २ म ॥ च २ द २ द २ या २ य ॥ ॥ ॥ नि २ अ २ ज्ञ
धा २ वा २ दि २ ॥ ॥ अ २ य २ गो २ म २ न २ या २ दा ॥ अ २ न ॥ नि २ अ २ द्या २
र २ या २ मि २ त्र २ दा २ च २ व २ ल २ र २ या २ मि २ व २ रि २ का ॥ द २ द २ वा २ क २ न
ल २ व २ द २ न २ अ २ ग २ म्मा २ व २ नि २ म २ सि २ त २ ध २ न २ व २ च २ ॥
ने २ या २ अ २ लि ॥ अ २ अ २ मु २ ग २ मि २ दि २ वा २ म २ ल २ शि २ व २ लि २
गृ २ ह्ण २ स्था २ हा ॥ ३ ॥ नि २ अ २ न २ दा २ अ २ ति २ या २ न २ जा

ला न्यत्र पूरुषाणि त्रीकाम तूयवी ॥ यवलि ॥
रसादा ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ वलि मूल ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे
क ४ क ४ यथा नारु वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
नाथ यवलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
वलि ॥ ॥ यथा सर्वथा मिथ्या वलि ॥ ॥ चाना मूल अथ वलि ॥
ऊरु माहाका लाय वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
नारु वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
हृदु कादि ग ॥ ॥ लक्ष्य वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे

वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
दिमाह ग ॥ ॥ लक्ष्य वलि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
व्या ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
मल मण्यि ॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
दहि यगु दहि यज दहि यज दहि यज दहि यज दहि यज
॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे
॥ ॥ ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे ज्ञे

हल ॥ गायत्र ॥ कायदात्र ॥ उ चारहाहाकलस
॥ योगिमा ॥ काय ॥ कजकुडक ॥ गलोस ॥ युनम
दत्र ॥ रगवति ॥ कायान्निया ॥ उवसावीया
॥ सिद्धिलश्रीया ॥ माहाकात्रया ॥ किउया ॥ वा
बुलुया ॥ थुगिठययाया ॥ मययाय ॥ उंन
मयलिकायेरा ॥ आदीशुस ॥ उकासाव
लनय ॥ उंविद्युग ॥ गवद्यु ॥ उडकासाव
उंम ॥ गसासन ॥ उंखडकाम ॥ उंयादवी

नय ॥ उंयीगाकासायनी ॥ दिवीजया ॥ उंनका
गुवेत्रगी ॥ उंनमा ॥ ल्यदय्यल ॥ उंउल्लेलाव
॥ रुक्किलोगख ॥ गणलमावि ॥ वामिउम
चापुत्रयो ॥ उंनमयलिकाये ॥ यीनूअवाव
उंनम ॥ मममहामाथम ॥ श्रीसर्वलामपुन
॥ गयनयाय ॥ कययिचिय ॥ अतिथक ॥ व
ननगिय ॥ सानकाकाय ॥ वकनेय ॥ अम
यवकु ॥ न्यासविकाय ॥ नसिय ॥ सुयसा

[illegible]

या लाय पा इ कां ॥ नं दों दों दूं वर ख निद्र म ह
स्य य धि प ग थ नु कें पि ना उ दा हा न रा ख
व रि नी उ हा ला मु मुख अ व न र हो व व वृ य
ल गृ क्र र उ व र म् प्र र ल ल ख ख खा दि र म् रु
दा म मा धि प ग थ रु म ख व न दा म म् सु व रु थ
न धा न्य ला ता द हि न म ४ सा हा ॥ ठ लि ॥ द पु म्
दा ॥ नि ऊ म य वा स ना थ या इ कां ॥ नि ऊ
का थ्री ऊ क ल पू गे व दु के ना था य पा इ कां ॥

वलिगुर्जनी॥ ॥ अंजमृषासनायपायु॥
 उमंगीगुंगलसेयीकुलगलम्वनारपा
 यु॥ वलि॥ मेजमृषा॥ ॥ अंजयदशासनायपायु
 क॥ अंजमृषासनेपायु॥ अंजउलि॥ अंजमृषा
 नन्दगकिरेनवानन्दविनाधिपमयसं
 श्रीमदाविद्यानाउमृषापायु॥ ३॥ अंजमृषा
 निमृषा॥ वलि॥ अंजमृषासनायपायुकांज॥ अंज
 सिहसनेपायु॥ अंजमृषासनायपायुकांज॥ अंज

[illegible]

ॐ ॥ ज न नमो नमो गिरवाये ॥ जं जं दं दं सुकान
रं रं कं कं वादं ॥ जं जं लं लं मां शं स ॥ नं नं गं गं यो ॥ जं
जं मं लं लं नं नं अं अं मं मं रं रं दे ॥ कं कं लं लं या या सा ॥ अं अं गं गं नं नं
मं मं ॥ जं जं स नं नं यो ॥ जं जं अं अं मं मं ना ना गं गं कं कं यो ॥
अं अं न नं नं ना ना यो यो वा वा ॥ जं जं कं कं दा दा यो यो वा वा इ ॥ जं जं ना ना
यो यो वा वा ॥ जं जं यं यं अं अं स नं नं यो यो वा वा ॥ जं जं यं यं गं गं यो यो वा वा
कं कं मं मं ना ना यो यो वा वा ॥ जं जं कं कं लं लं कं कं यो यो वा वा ॥ जं जं यं यं मं मं
स नं नं यो यो वा वा ॥ जं जं सिं सिं ला ला स नं नं यो यो वा वा ॥ जं जं मं मं हि

वा स नं नं यो यो वा वा ॥ जं जं गुं गुं रा स नं नं यो यो वा वा ॥ जं जं नि
अं अं ला स नं नं यो यो वा वा ॥ अं अं नं नं ॥ उं उं उं उं चं चं अं अं मं मं दं दं वा वा
अं अं यं यं इं इं गं गं वा वा गं गं मि मि वा वा नं नं यं यं वा वा मि मि कं कं ला ला हा हा सा
वि वि शं शं कं कं टि टि स मं मं यं यं रा रा हं हं यी यी नं नं वं वं अं अं कं कं ला ला हा हा मं मं
वि वि नं नं गं गं वा वा नं नं ला ला मि मि नि नि किं किं नी नी टी टी कं कं लं लं ला ला का का ली ली
कं कं यं यं नं नं मं मं मि मि ना ना यो यो वा वा ॥ नं नं लं लं मं मं ला ला वि वि शं शं लं लं दं दं
नं नं मं मं ला ला वं वं लं लं वि वि ना ना ॥ अं अं अं अं दं दं गं गं अं अं जं जं का का नं नं दि
वा वा वं वं मं मं गं गं लं लं वि वि ना ना ॥ रं रं कं कं वा वा लं लं नं नं थं थं चं चं कं कं वं वं

किं शिखरं लंबक दक्षि (६) रुतं धर्तुं कर्म पाने कथं वद
मक कने । मिहासन स मा नृदाः मदिवा मन यं लि दी । श्रु
लेकं न वद्या गा नि का दे श्वे क्षे नि घा मि नी । ध्याय माना रु
दा देवी सर्वं श कुरु क्य कनी । जया आ द व वा वृ ला का ख्या य
ना न भा इ मु त । ध्यान यु र्वा पायू ॥ गु र्यां ज लि । नै र्द्री स धी
महा इ र्ग व द्यु का ख्या य य पायू ॥ ३ ॥ वलि या मे दा ॥ ॥
य नि वा त । नै र्द्री ज या य २ । नै र्द्री वि द्य या य २ । नै र्द्री मु ति गा य २ ॥
नै र्द्री मृ य ना डि गा य २ । नै र्द्री ज र त्र २ । नै र्द्री रु क्म न्य २ । नै र्द्री म

ह न्य २ । नै र्द्री श क व २ ॥ वलि ॥ ह व म दा ॥ ॥ ग ग म
व श्व नी ॥ न्या स । नै र्द्री गं रु द या य न म ग ॥ । नै र्द्री श्रु
ना दि ६ । नै र्द्री मि हा स न २ । नै र्द्री म दि वा स न २ ॥ ध्या न । नै र्द्री
दु व श्व नी महा दे वी न मा मि प द्या न नी । उ दि मा य र्वा मे क
सा क ल न । ध्या वि वि न य ७ । स द्वा ल का ल र्म य का हा उ मा
ला व लं वि नी । श्रु द ग र्जु जा का ना यी न व क रु त्र नृ हा ।
ख रु श कि न था वा द म द्गु र्म मृ द्ग ना दि च । व रु व व न
ना का य व क श्रु लं व कि (६) रु ट क या ग ग धी र्व न रु

नीदय्यदीधुडं । उमनूलागुलकायधाययदामकनु
ऊ । मिहासनगतादवीपुयालारुक्मिणं गंधरा ॥ महाम
हिवमात्रुदद्यायादनयस्मिणी । गूलनमदिवायार्त्त
वकांमध्यतथेवव । कायत्रुयावगालीचहालात्रुयस्मि
ध्वनी । वक्राध्वामात्रुवन्द्यपूजनीयामहध्वनी । ध्या
यमानासदाइ । गमनमासि सर्वदवता । ध्यानपूर्व्यनम ॥
॥ गुणजलो ॥ नंदं । रगवगावहिकार्यायनी
वध्वय्यापायू ॥ ३ ॥ वलि ॥ पनवान । नंदं । मध्य

नममायववदविमलश्रुवक्राध्वदि ॥ ऊर्कमारु
ध्वनी ॥ वि कोमानी ॥ टं वक्रव ॥ तं वानाही ॥ यं ०० ल्याइ
॥ ध्व ॥ यं रासुडा ॥ गं म हल श्री ॥ वलि ॥ नंदं । गाजाकि
नीयागिनी ॥ नात्राकिनीयागिन्य ॥ लालाकिनीयागि
न्य ॥ काकाकिनीयागिन्य ॥ सासाकिनीयागिन्य ॥ हा
हाकिनीयागिन्य ॥ वलि ॥ ॥ तगासिद्धि ल श्रीया ॥ न
स ॥ जां रुदयादि ॥ नंदं । श्रुयादि ॥ नंदं । महा
यगासनाय ॥ ध्यान ॥ नंदं । पू । धु । नृ । मृ । ति । न । ख । क । धु

धननाथ स्वयं कृष्ण कृष्ण जगन्नेत्रः ॥ यच्च दत्तं भोक्तव्यं
 गयनाथ कालिका सुदनी । नृपत्या यत्रिव कार्यं यं कय
 नां भूला सि मृष्टुं दुर्गं खडा दुर्ग सयाग पानन ॥ अहं
 ॥ प्रसादा रय ॥ ध्यानं यथै नमः ॥ यथा जली ॥ जिह्वै नमः
 सच्चिद्विद्यानि ल्यानमः ॥ सच्चिद्विद्या नाल्यानमान्त्रिय
 दिशानन्द नन्दिनाथ सकल कुलवक्ता मायिकेयरो गवय
 वधु कापालिन्यो गद्यथा ॐ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं क्लीं नमः ॥ या पु
 ॥ १ ॥ वलि ॥ ॥ मारुका लया न्यास ॥ जिह्वै मा हृदया

[illegible]

त्यादि कर्नाग न्यास ॥ १ ॥ आध्यानादि ॥ २ ॥ वृथासना यथा ॥
मिनासना यथा ॥ ३ ॥ ध्यान ॥ ४ ॥ वल्लुकादि यथा ॥ ५ ॥ ज्ञान ॥ ६ ॥
कृते ॥ ७ ॥ भवन ॥ ८ ॥ काष्ठा लावन ॥ ९ ॥ विविध भुक्तोदान दामध्य ॥
उत्सर्ग ॥ १० ॥ माला लक्ष्मी ॥ ११ ॥ ध्यान ॥ १२ ॥ लावन ॥ १३ ॥ यथा ॥ १४ ॥ यथा ॥ १५ ॥
लाक्षावन दारुय ॥ १६ ॥ यथा ॥ १७ ॥ कर्तुं ॥ १८ ॥ भवन ॥ १९ ॥ यथा ॥ २० ॥
क ॥ २१ ॥ विषय ॥ २२ ॥ नाना ॥ २३ ॥ यथा ॥ २४ ॥ यथा ॥ २५ ॥ यथा ॥ २६ ॥
गा ॥ २७ ॥ यथा ॥ २८ ॥ यथा ॥ २९ ॥ यथा ॥ ३० ॥ यथा ॥ ३१ ॥ यथा ॥ ३२ ॥
यायु ॥ ३३ ॥ यथा ॥ ३४ ॥ यथा ॥ ३५ ॥ यथा ॥ ३६ ॥ यथा ॥ ३७ ॥ यथा ॥ ३८ ॥
यथा ॥ ३९ ॥ यथा ॥ ४० ॥ यथा ॥ ४१ ॥ यथा ॥ ४२ ॥ यथा ॥ ४३ ॥ यथा ॥ ४४ ॥

त्याधियगयवद्विषयवृत्तान्न आत्मविद्याशिवतत्वायः
ध्यानादि ॥ १ ॥ ध्यान ॥ २ ॥ ध्यान ॥ ३ ॥ ध्यान ॥ ४ ॥ ध्यान ॥ ५ ॥
क ॥ ६ ॥ ध्यान ॥ ७ ॥ ध्यान ॥ ८ ॥ ध्यान ॥ ९ ॥ ध्यान ॥ १० ॥ ध्यान ॥ ११ ॥
क ॥ १२ ॥ ध्यान ॥ १३ ॥ ध्यान ॥ १४ ॥ ध्यान ॥ १५ ॥ ध्यान ॥ १६ ॥ ध्यान ॥ १७ ॥
विद्या ॥ १८ ॥ ध्यान ॥ १९ ॥ ध्यान ॥ २० ॥ ध्यान ॥ २१ ॥ ध्यान ॥ २२ ॥ ध्यान ॥ २३ ॥
ता ॥ २४ ॥ ध्यान ॥ २५ ॥ ध्यान ॥ २६ ॥ ध्यान ॥ २७ ॥ ध्यान ॥ २८ ॥ ध्यान ॥ २९ ॥
विद्या ॥ ३० ॥ ध्यान ॥ ३१ ॥ ध्यान ॥ ३२ ॥ ध्यान ॥ ३३ ॥ ध्यान ॥ ३४ ॥ ध्यान ॥ ३५ ॥
त्वा ॥ ३६ ॥ ध्यान ॥ ३७ ॥ ध्यान ॥ ३८ ॥ ध्यान ॥ ३९ ॥ ध्यान ॥ ४० ॥ ध्यान ॥ ४१ ॥
ध्यान ॥ ४२ ॥ ध्यान ॥ ४३ ॥ ध्यान ॥ ४४ ॥ ध्यान ॥ ४५ ॥ ध्यान ॥ ४६ ॥ ध्यान ॥ ४७ ॥
ध्यान ॥ ४८ ॥ ध्यान ॥ ४९ ॥ ध्यान ॥ ५० ॥ ध्यान ॥ ५१ ॥ ध्यान ॥ ५२ ॥ ध्यान ॥ ५३ ॥
ध्यान ॥ ५४ ॥ ध्यान ॥ ५५ ॥ ध्यान ॥ ५६ ॥ ध्यान ॥ ५७ ॥ ध्यान ॥ ५८ ॥ ध्यान ॥ ५९ ॥
ध्यान ॥ ६० ॥ ध्यान ॥ ६१ ॥ ध्यान ॥ ६२ ॥ ध्यान ॥ ६३ ॥ ध्यान ॥ ६४ ॥ ध्यान ॥ ६५ ॥

कलायति स्म यथा ॥ वलि ॥ रघुन मदा ॥ ॐ ति कल शां
न ॥ ॥ तदेक मयुज न ॥ न्यास ॥ त्रिंशो द्यो द्यो दि ६ ॥ त्रिंशो
धनादि ६ ॥ त्रिंशो न का ना स न या ॥ ध्यान ॥ त्रिंशो ला कृष्ण म नि
रा द वी य द्र ना ग स म य रा ॥ सर्व न ल वि वि रा आ र्थ वि का रू ग
वि ग्रह मू र्छा द ग मु र्छा दे वी ना ना य रु न ॥ ध्या यु गा ॥ ना ना व स
ध वी दे वी रा ला कृ ना न्य वि द्य त ॥ ख रू पा ग म क म म य क य
ल कृ लि ग ध व ज ॥ त्रिंशो म य ध न व म न व रू य या ॥ ६ ॥
क ध न पा ग म ख रू म स क म धु ल ॥ मूल म म न व द ॥ अ ग र
रि या म ना क ॥ म धु ल व रू यि त्वा पु न द ॥ पु ना ग स र्वि ता ॥

य स नि का ग का ४ स द्वा वि मृ ता मृ ग का द्वा ॥ अ नू प र्वा मार
॥ च लु ना दि ॥ अ या ज ति ३ ॥ अ र्था त्र म न ॥ त्रिंशो हं र
कृ लो हं म ल म न म म ह न स कृ लो गी थ मि नू द व ना
क ला ग रा वि य ग र वि रू वि रू द ति म न आ त्म वि द्य
मि य र लो थ आ ज न न गी कि ले र व न नू वी वा वि य
ग स रू गी ह ॥ ३ ॥ य धु क ल म य या ॥ उं हं स अ रू गी
य र म ह र ॥ ४ ॥ त्रिंशो य म ह ल आ स कि स दि ना य
य या ॥ ३ ॥ य र म ह र ॥ ४ ॥ त्रिंशो य म ह ल आ स कि स दि ना य





ॐ ॥ जयादि ॥ वद्वे ॥ आदि ॥ अतिगंगादि ॥ ॐ
दि ॥ आदिर्या ॥ यनियदादि ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
विष्णुनादि ॥ मखादि ॥ नद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
॥ वसिष्ठदि ॥ अनन्नादि ॥ वद्वे ॥ विष्णुनादि ॥ ॐ
सिव ॥ अग्निनादि ॥ यनियदादि ॥ गंगादि ॥ ॐ
वसिष्ठदि ॥ वलि ॥ धनमुद्रा ॥ ॐ निवृत्तमात्रे ॥
॥ तमकृतयेजनी ॥ यास ॥ विजवाहुदयोर्यदि ॥ ॐ
लादिकनोगन्या ॥ आक्षरादि ॥ अजकानामनाययो

यु ॥ अग्निनादि ॥ ललाटा ॥ नमनिनादवीपद्वे ॥ गंगादि ॥ ॐ
सर्व ॥ वलि ॥ विष्णुनादि ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
जादवीनाना ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ नाना ॥ नमनिनादि ॥ ॐ
अनाना ॥ विष्णुनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
धर्ज ॥ यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ
यथा ॥ अग्निनादि ॥ यद्वे ॥ अग्निनादि ॥ ॐ

नदृष्टं वायुं । अथाजलि । जेऊं दाको हुकु १५ सु २००
 ह्यादि । जेऊं सारु रेनुवान नदविनाश । अथ नैरुं रूको कुल
 कृष्णाय पाद्म । जेऊं सुपुं सुपुं नूपाइ । अथा नवक वनिमि
 । उग्रय अथा मूल न नै । उडव अदि ८ । अथादि
 ८ । उष्मा ल्यदि ८ । काहु दयादि ॥ था निमूडा ॥
 वलि । थु नि कुं हयुजा ॥ ॥ गता । मकाल वलि
 संपूजा योय । न्यास । जेऊं मां हु दयाय ॥ गू ह्यादि ॥
 क रेग न्यास । अथ न गय । जेऊं आ धावा दि ८ । जेऊं

महायुगास नारोपाइ को ॥ ॥ कान । जेऊं महायु
 गासना दूरुं वृषु वलुं गुजुं सुं । व का सा वि ला रं
 नरीम न वृ नाद्व मिना प्रह ॥ विंग भं अ विंग के ग
 महाकाय महावर्ग । वायु च मयि नी धान । सिह
 वभा नि नीय के । नत ए यो लि रं नूपा न दि विर
 विगं । रायु ह दस पा । रं व वि नू रं द्वा इ वि वि म
 विगं । कादि महा । गेऊं कु व न्मा हा न ह विगं ।
 व धा । ताम महा काल । रं न वं व न न न । धा

[illegible]

नीममहादेववायमहागमगमनासिवायि
॥३॥ जंजगवसहउरुनवी००धिकाप्रवकः
यादमहादेववायमहागमगमनासिवायि
॥१॥ जंजगवसहउरुनवी००धिकाप्रवकः
हादेववायमहागमगमनासिवायि
॥४॥ जंजगवसहउरुनवी००धिकाप्रवकः
महागमगमनासिवायि॥५॥ जंजगवसहउरुनवी००
धिकाप्रवकः॥६॥ जंजगवसहउरुनवी००धिकाप्रवकः

हृद्यत्रीगकि स हि नाय गाल वृक्षाय (ग) खं पूर्व
 ॥ २ ॥ नंज च वृक्ष ३ काल शराय व पु रे न वाय
 च कामात्री स कि ग हि नाय वट वृक्षाय (ग) खं पूर्व
 व ॥ ३ ॥ नंज ट ० उर ल अद्दहा स शराय का ध रे न वा
 यट वं वृक्षी ग कि स हि नाय क द म वृक्षाय (ग) खं पूर्व
 व ॥ ४ ॥ नंज गं थ द ध नंज य नी शराय उ न्न क रे न
 वाय गं वा गी ही ग कि स हि नाय निम्ब वृक्षाय (ग) खं
 पूर्व व ॥ ५ ॥ ज य द्द व र म व त्रि शराय क दाल रे
 न वाय य वं ॥ ६ ॥ ज य ग कि हि नाय क नं उर शराय (ग)

यं पूर्ववत् ॥ १॥ अयं नलव कामुकक नयरीय गीतले
 वाययं चामुमुगकिरेहि नाये अ मलवृक्षया ॥ १॥
 लज्जामयसह देवीकाष्टकपायसं दानेन वाययं म
 लालश्रीगकि मदिगाययु कृष्टनाय ॥ ८ ॥ दधुमूडा
 विलि ॥ ७ ॥ निरुनेव निमूजा ॥ ॥ नगाश्रमूडाव नः
 यूजने ॥ ग्राम ॥ अचहिदयादि ॥ ६ ॥ अज्जाव नदि
 विजयनेमनयाय ॥ क्षान ॥ अद्याव नका निम
 डाचव लुहया निरुका ॥ देखाक नलवदगानाय
 नस्याय निरुका ॥ निमूजा ॥ काल न ॥ ॥ अमूला

विदुषिना श्रद्धा रुट धनादवी जगत्पुखट्टाङ्ग यद्वि
ना कलिकाया ललक मार विन्दु वाण्डे नानथ ॥ क्व
वानेथा वव्वेनायिगे क मार विंगला चनी ॥ सव्वतिह
वांगी हाज न वग ह सिता उद्धक म विन्दु वी च चाम
उव न मग्गे नी धन पुषा पाय ॥ उया जलि ॥ वं ७
मुग्गा सिद्धि चाम ॥ उय वलि गृद्ध २ स्वाहा ॥ सिद्ध न
हुं ॥ उा उा उा न जाला धन न गिनि न न व
या ॥ अय वलि गृद्ध २ स्वाहा ॥

॥ इन्द्रवज्र ॥ जयादि ॥ विष्णु ॥ अदि ॥ वलि ॥ यानि
मूडा ॥ चक्राधिपतिवलि ॥ ॐ निवा ॥ इन्द्रवलि ॥
उमा ॥ नंदननदिनवाय ॥ नंदनमहाकालायवाय
॥ नंदनश्रीकृष्ण ॥ नंदनवालायवाय ॥ वलि ॥
नंदनविक्रम ॥ गण ॥ सिद्धि ॥ नंदनमा ॥ एतद्विक्रम ॥
वधि ॥ श्रीकृष्ण ॥ विष्णु ॥ अदि ॥ एतद्विक्रम ॥ वागीश्वरी
॥ कम ॥ विरयं ॥ मृग ॥ कलि ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ विष्णु
लक्ष्मण ॥ वंशुमी ॥ हनु ॥ एतद्विक्रम ॥ नंदनविक्रम

॥ गंगा वलि मूल रुया ॥ केश वलि ॥ वडुक ॥ गदी ॥ उग्र
वधु ॥ वामु ॥ महो काल ॥ मह कनवी ॥ गगन ॥
सर्वे रथ रथ ॥ सर्वे रथ दव रथ ॥ सर्वे रथ या गिनी ॥
आकाश वा ॥ असि गा गदि ॥ वदना ॥ अदि ॥ उग्र
दि ॥ मूड वधु ॥ दुरु कादि ॥ असि गा गदि ॥
समसे मनुयी ॥ ० गि ॥ उका नुका ॥ ॥ गंगा समय व
लिनीय ॥ सर्वयी ॥ ० य ॥ ० गि ॥ अऊ ना दि वलि वीय ॥
वनिशी थानी वलि विय ॥ वव सुथिय ॥ गि व ॥ विय ॥

चउष द्विया गिनी वलि विय ॥ मरु वलि विय ॥ वूनि
वलि विषि वीय ॥ ॥ वन्दना ॥ दि ॥ धूय दीया दि ॥
ल ॥ गाम् वय निव ॥ जय सकल सदे या य ॥ म
ले म ॥ केश वडुक ॥ गदी ॥ रग वनि मगन म ॥ सु
ठिलिया ॥ कात्यायनी या ॥ उभय वीया ॥ कल मय
॥ कुरया ॥ मरु काय ॥ कुरया ॥ वामु अया ॥ अः
गमया मान का ॥ कवच ॥ अऊ ना ॥ कीला क
॥ संकुल ॥ पा ॥ ॥ मरु मरु माया ॥ मरु ॥

अइवावा॥ कर्तुवगका॥ यंचवयगाकासर्वावहाः
नयूजा॥ ॥ उज्यादि॥ स्मृयादि॥ ग्रनमस्का
व॥ न्यासाद्यैवागुयूजा॥ आत्मयूजा॥ भादनीर्य
॥ माननीय०॥ यंचयलि॥ निवलि॥ नवात्मा॥ क
मर्मउत॥ मूलस्मानगाधनक॥ कुमावीयन्यास
याय॥ नैजकांदेदयाया॥ स्मृयादि॥ वउंऊगा॥ न
ज॥ आषाढादि॥ नैजमयूवा॥ नवाययादू॥ योन
नैजवैष्णवा॥ नैजकासागति॥ कादि॥ मयवहा॥ स्मृया

विम्वनितादवी॥ श्रीवत्सहसिगानना॥ कलसूयक
हामायाकोमावीशुसूयि॥ श्रीनैवयुवैककाय
यूष्मलिगकि॥ स्मृयकै॥ यत्रवागमना॥ नैजमूका
लका॥ नवविगा॥ निशिवाज॥ समापदा॥ विद्यनैम
कि॥ काविदी॥ श्रीगण्यसंयदाले॥ श्रीमाया॥ पूरयगम
य॥ सर्वकाम॥ श्रीदेवी॥ सर्वशायी॥ मुहमेवो॥ श्री
वउंऊगा॥ वउंऊला॥ वउंऊका॥ विनी॥ श्रीला॥ कवी
सदा॥ नैमिकी॥ मावी॥ उरमे॥ नैला॥ श्रीन॥ पूर्यवाइ

॥ अथाष्टलि ॥ अं रं दं उं अं हं को ॥ अं दं गं मं हं को
मात्रिका विवर्णया इका ॥ अं दं गं कं ॥ अं रं गं कं ॥ अं रं
लो ॥ अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं
मं रं गं ॥ अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं अं रं गं
या ॥ अं रं गं अं रं गं अं रं गं ॥ ३ ॥ अं रं गं अं रं गं ॥ वलि ॥ ॥
अं रं गं अं रं गं अं रं गं ॥ वलि ॥ अं रं गं अं रं गं ॥ अं रं गं
वा ॥ अं रं गं अं रं गं ॥ ॥ अं रं गं ॥ ॥ अं रं गं ॥ ॥ अं रं गं ॥
हा को ल ॥ गं अं रं गं ॥ वलि ॥ ॥ अं रं गं ॥ ॥ अं रं गं ॥

मूला ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
ल ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
ल ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
नं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
की ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
काय ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥
अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥ अं रं गं ॥

लिखक। चन्द्रलिङ्गसुखदा। त्मागीर्वाह। गोसत्रिकाया
वृत्तिका। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
यादं न। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
समयादि। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
विधि। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।

जागनिमित्तं। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
यथाविधानं। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
दीपकादि। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
गानी। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
गनी। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।
लिखक। लिखक। लिखक। लिखक। लिखक।

[illegible]

माधायसंज्ञाय ॥ ॥ सुष्ठु तदगमनं ॥ श्रीलङ्का
यमिदं हनि ॥ सुष्ठु तया चूडगे सिद्धं वादुत्तमथै
निसंथादका यावत्तु गयमिसमूलमस्तु यत्तया व. क.
यावत्तु ॥ भावसं ॥ ऊवतीदावत्तु लंका व. क. ॥
॥ कुरुदगमनया चक ॥ वल्लुकि गये निमि ॥ ॥ यय
गया चूडिनसमय यावत्तु ॥ श्री चूड व. क. ॥ ॥
निदं ॥ मियाय त्रिया निदं ॥ ॥ ॥ ताम्बुधा विधि ॥
यद्गुद्गु निमालिनाकादवाय ॥ ॥ ॥ उं श्रुयादिसूर्यर्ध ॥



















